अक्षर अदब ▶ रूपेन्द्र सिंह चौहान

कल के आईने में आज

कुछ किताबों को हम सिर्फ़ पढ़ लेते हैं, पर कुछ होती हैं जो दिमाग़ में खलबली मचाकर जादू-सा कर देती हैं और सोचने लिए बाध्य कर देती हैं। अश्विन सांघी की पुस्तक 'सियालकोट गाथा' भी ऐसी ही कृति है। पुस्तक दो समानांतर कहानियों, एक इतिहास के पन्नों से तो दूसरी वर्तमान में भारत-पाकिस्तान की पृष्ठभूमि से, पर चलते हुए इतिहास और वर्तमान में सम्बंध स्थापित करती है।

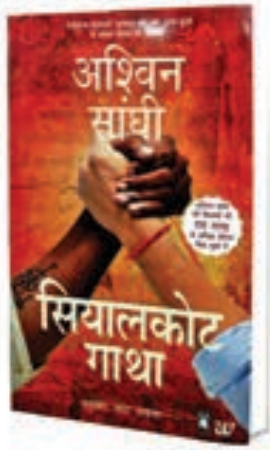

- पुस्तक... सियालकोट गाथा
- लेखक... अश्विन सांघी
- प्रकाशक...वेस्टलैंड प्रकाशन व यात्रा बुक्स, नई दिल्ली
- मूल्य... ₹ 350

कथानक को दो युवा बिज़नेसमैन अरविंद और अरबाज़ के इर्द-गिर्द बुना गया है। वे धन से जुड़ी महत्वाकांक्षाओं के चलते एक-दूसरे से टकराते हैं और फिर शुरू होती है गलाकाट स्पर्धा। कथा का दूसरा हिस्सा अशोक के काल से शुरू होता है, जब वह रक्तपात छोड़ शांति के मार्ग पर चल पड़ता है। कहानी ख़ूबसूरती से बुनी गई है, इसलिए रोचक व पठनीय है। बहरहाल, ध्यान रहे कि लेखक ने ऐतिहासिक घटनाओं को अपनी सुविधानुसार तोड़ा-मरोड़ा भी है, अतः इसे महज़ उपन्यास मानें, दस्तावेज़ नहीं। •